भाषा कौशल

कक्षा - 8

भाषा कौशल–8

1. भाषा और व्याकरण

I. 1. भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार जान सकता है। भाषा के मुख्यत: दो रूप हैं– (क) लिखित रूप (ख) मौखिक रूप।

(क) लिखित भाषा के उदाहरण–रामायण, महाभारत आदि।

(ख) मौखिक भाषा के उदाहरण–रेडियो, दूरदर्शन आदि।

2. **मातृभाषा** वह है जिसे व्यक्ति अपनी बाल्यावस्था से माता का अनुकरण करके सीखता है।

राष्ट्रभाषा वह है जो किसी देश या राष्ट्र विशेष के लिए प्रतीक भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।

राजभाषा उस भाषा को कहते हैं जो किसी भी देश विशेष के कार्यालयों व राज-काज में प्रयोग की जाती हो।

बोली–एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा।

उपभाषा–बोली का विकसित रूप या किसी भाषा का बिगड़ा रूप।

3. किसी भाषा की उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि या चिह्न 'लिपि' कहलाती है।

चार प्रमुख लिपि और उनकी भाषा–
(क) हिंदी–देवनागरी, (ख) अंग्रेज़ी–रोमन, (ग) पंजाबी–गुरुमुखी, (घ) उर्दू–फ़ारसी।

4. भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। जिनके नाम हैं–
1. हिंदी, 2. संस्कृत, 3. मैथिली, 4. तेलुगु, 5. तमिल, 6. बँगला, 7. उड़िया, 8. कन्नड़, 9. डोगरी, 10. कोंकणी, 11. नेपाली, 12. उर्दू, 13. पंजाबी, 14. मलयालम, 15. गुजराती, 16. असमिया, 17. मणिपुरी, 18. मराठी, 19. सिंधी, 20. कश्मीरी, 21. बोडो, 22. संथाली।

5. 'व्याकरण' वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध स्वरूप एवं शुद्ध प्रयोग का ज्ञान प्राप्त होता है। व्याकरण के मुख्यत: तीन अंग हैं–
1. वर्ण-विचार, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

II. 1. ×, 2. ✓, 3. ✓, 4. ×, 5. ×, 6. ×, 7. ✓

III. 1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (ङ), 5. (घ)।

IV. 1. (क), 2. (क), 3. (घ), 4. (ख), 5. (क)।

V. 1. 1. पंजाबी, 2. हिंदी, 3. बँगला, 4. गुजराती, 5. तमिल, 6. हिंदी, 7. असमिया, 8. तेलुगु, 9. उड़िया, 10. हिंदी।

VI. 1. (क), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ख), 5. (क)

2. वर्ण-विचार

I. 1. 'वर्ण' भाषा की उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके खंड या टुकड़े न हो सकें। वर्ण के दो भेद होते हैं–
(क) स्वर वर्ण (ख) व्यंजन वर्ण।

2. जिस रूप में हम वर्ण को लिखते हैं, उसे 'अक्षर' कहा जाता है। अक्षर में स्वर को अलग नहीं किया जाता जबकि वर्ण में स्वर का प्रयोग–उच्चारण किस प्रकार किया जाए के लिए किया जाता है, जैसे–
अक्षर– पा, खा, बि, जो, तो।
वर्ण– प् + आ, ख् + आ, ब् + इ, ज + ओ, त् + ओ।

3. हिंदी वर्णमाला में कुछ ध्वनियों पर विदेशी प्रभाव आ गया है जिन्हें 'आगत वर्ण' कहते हैं। जैसे–क़, ख़, ग़, ज़, फ़ और ऑ। 'ऑ' अंग्रेज़ी भाषा से आया हुआ वर्ण है जिसका प्रयोग 'बॉल, डॉक्टर' आदि शब्दों में किया जाता है।

4. जब दो या दो से अधिक स्वर-रहित व्यंजन आपस में मिलकर एक नया व्यंजन बनाते हैं, तब वे 'संयुक्त व्यंजन' कहलाते हैं। जैसे–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र आदि।

5. **अल्पप्राण व्यंजन–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें 'अल्पप्राण व्यंजन' कहते हैं। वह वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण तथा अंतस्थ व्यंजन 'अल्पप्राण व्यंजन' है। जैसे– क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ढ़, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व।

महाप्राण व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु अल्पप्राण की तुलना में कुछ अधिक निकलती है और 'ह' जैसी ध्वनि होती है, उन्हें 'महाप्राण व्यंजन' कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन महाप्राण है। जैसे–ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह।

6. बलाघात प्रभावशाली अभिव्यक्ति के लिए इसलिए आवश्यक है क्योंकि इससे वक्ता के प्रयोजन में विशेषता आ जाती है अर्थात् बलाघात किसी भी भाषा के उच्चारण की शोभा है। जैसे–'अग्नि' और 'भक्त' में 'अ' और 'भ' पर ज़ोर दिया जाता है।
7. भाव-विशेष को प्रकट करने के लिए या उसमें परिवर्तन लाने के लिए लाए गए सुर के उतार-चढ़ाव को 'अनुतान' कहते हैं। एक ही शब्द को विभिन्न अनुतानों में उच्चरित करने से उसका अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए 'सुनो' शब्द लें। यह सामान्य कथन, आग्रह, क्रोध या आदेश के रूप में बोला जा सकता है।

II. 1. (क), 2. (ख), 3. (घ), 4. (क), 5. (क)।

III. **अनुनासिक–** काँपना, चाँद, मुँह, माँ, आँख।
अनुस्वार– हंस, पंख, मंद, पंथ, रंग।

IV. 1. आँख, 2. डंक, 3. साँप, 4. अंक, 5. काँच, 6. जंग।

V. 1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर, 3. व्यंजन, 4. संयुक्त व्यंजन, 5. अयोगवाह, 6. अंतस्थ।

VI. क्ष– क् + ष त्र– त् + र
ज्ञ– ज् + ञ श्र– श् + र
गृ– ग् + ऋ प्र– प् + र
मं– र् + म्

VII. काम– क् + आ + म् + अ
कृमि– क् + ऋ + म् + इ
कर्म– क् + अ + र् + म + अ
क्रम– क् + र + म + अ
कम– क् + अ + म् + अ
कमा– क् + अ + म् + आ

VIII. 1. काला, 2. मना, 3. दीप, 4. अर्ध, 5. मात्र, 6. हर, 7. हीरा, 8. गृह, 9. गुरु

3. वर्तनी-विचार

I. आर्शिवाद– आशीर्वाद, उरिण– उऋण, प्रथक– पृथक, दुरदशा– दुर्दशा, प्रीक्षा– परीक्षा, जाग्रति– जागृति, कवियित्रि– कवयित्री, कृतघन– कृतघ्न, त्रिस्कार– तिरस्कार, अग्यान– अज्ञान, जिग्यासु– जिज्ञासु, अतुल्यनीय– अतुलनीय, विदवान– विद्वान, समुन्दर– समुद्र, महातमा– महात्मा, अगनि– अग्नि, सोंदर्य– सौंदर्य, कुमदिनी– कुमुदनी, उपन्यासिक– औपन्यासिक, उजवल– उज्ज्वल, स्मरन– स्मरण।

II. 1. (क), 2. (क), 3. (क), 4. (क), 5. (क)।

III. 1. मंत्री-परिषद, योगी-राज, दिव्य-रात्रि, अष्ट-वक्र, निरपराध, पितृ-भक्ति, राजपथ, दोपहर, सेनानायक।
2. अत्यधिक, अधीन, अभ्यार्थी, दुरावस्था, अभ्यंतर, दावानल, अनधिकार, श्मशान, स्कूल।
3. व्यंग्य, अध्ययन, उच्छृंखल, उज्ज्वल, द्वंद्व, स्वास्थ्य, आच्छादन, तत्वाधान, उच्चारण।
4. रामायण, मिसाल, कैलाश, सुश्रुषा, यथेष्ट, आशीष, युधिष्ठिर, वरिष्ठ, वनस्पति।

4. संधि

I. 1. नीरज, 2. नीरोग, 3. अतःएव, 4. दुष्कर्म, 5. निष्ठुर, 6. यशोदा, 7. संरक्षण, 8. संलग्न, 9. उल्लेख, 10. सज्जन, 11. जगन्नाथ, 12. गायक, 13. अत्यधिक, 14. स्वेच्छा, 15. सूक्ति, 16. संकोच, 17. भानूदय, 18. मनोकामना, 19. नरोकामना, 20. दिगंत।

II. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क)।

III. 1. स्व + इच्छा, 2. सु + आगत, 3. सदा + एव, 4. मनः + बल, 5. प्रति + एक, 6. सत्य + आग्रह, 7. उत् + श्वास, 8. चित् + आनंद, 9. उत् + गम, 10. पितृ + आज्ञा।

IV. 1. मुनीश, 2. सूर्योदय, 3. प्रत्येक, 4. भजनामृत, 5. भानूदय, 6. सदैव, 7. तथैव, 8. जीर्णोद्धार, 9. कृपामृत, 10. चरणामृत।

5. शब्द-विचार

I. 1. तद्भव, 2. तद्भव, 3. देशज, 4. तद्भव, 5. तद्भव, 6. विदेशी, 7. तद्भव, 8. विदेशी, 9. विदेशी, 10. विदेशी, 11. देशज, 12. विदेशी, 13. विदेशी, 14. विदेशी, 15. तत्सम।

II. 1. (ख), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क)।

III. 1. कुंभकार, 2. दंत, 3. गृह, 4. भिक्षा, 5. भ्रमर, 6. नृत्य, 7. स्वप्न, 8. दुर्बल, 9. मनुष्य, 10. शाक,

11. घृत, 12. सूर्य।

IV. 1. सच, 2. सपना, 3. उजाला, 4. कोयल, 5. कान, 6. मीत, 7. दही, 8. दूध, 9. विदा, 10. थोड़ा, 11. माथा, 12. हाथ।

V. **रूढ़–** पेड़, जल, जलज, नम्रता, नमक, सजल।
यौगिक– घुड़सवार, शक्तिशाली, यज्ञशाला, अग्रगण्य।
योगरूढ़– दशानन, नीलपंख।

6. शब्द-निर्माण : उपसर्ग

I. 1. वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरंभ में लगकर उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

2. (*i*) अधि–ऊपर, श्रेष्ठ–अधिकारी, अध्यक्ष अधिपति।
(*ii*) अनु–पीछे, समान–अनुचर, अनुरूप, अनुज।
(*iii*) दूर्–बुरा, कठिन–दुर्घटना, दुर्दशा, दुर्गम।
(*iv*) प्रति–विरुद्ध, हरएक–प्रतिकूल, प्रतिकार, प्रत्येक।
(*v*) परा–उल्टा, पीछे–पराजय, पराभव, पराक्रम।

3. (*i*) अ–अभाव, निषेध–अजर, अछूत, अकाल।
(*ii*) अभि–सामने, ओर–अभिनय, अभिमुख, अभिलाषा।
(*iii*) उन–कम–उनतीस, उनचास, उनसठ।
(*iv*) उप–निकट–उपवन, उपकार, उपदेश।
(*v*) कु–बुराई–कुसंग, कुकर्म, कुमति।

4. कम–थोड़ा–कमज़ोर, कमबख्त।
ग़ैर–निषेध–ग़ैरहाज़िर, ग़ैरकौम।
ब–के साथ, से–बखूबी, बदौलत।

5. जनरल–प्रधान, जनरल–मैनेजर, जनरल–सेक्रेटरी।
हेड–प्रधान, मुख्य-हेड–मास्टर, हेड–क्लर्क।

II. 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग), 5. (ग), 6. (क), 7. (क)।

III. 1. प्र, 2. वि, 3. अंतर्, 4. पर, 5. ग़ैर, 6. बा, 7. अधि, 8. अभि, 9. आ, 10. अप, 11. अ, 12. आ।

IV. 1. (ख), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क)।

V. 1. परि– परिकल्पना, परिक्रमा; 2. प्र– प्रधान, प्रस्ताव; 3. उत्– उत्तर, उत्कर्ष; 4. अनु– अनुचर, अनुरूप; 5. सु– सुपुत्र, सुपात्र; 6. अ– अज्ञान, अभाव; 7. कु– कुसंग, कुकर्म; 8. अन– अनपढ़, अनबन।

7. शब्द-निर्माण : प्रत्यय

I. 1. जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल दें या उसमें कोई विशेषता ला दें, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं। जैसे–आ (घेरा, ठेला), आर (लुहार, सुनार), आवा (छलावा, भुलावा) आदि।

2. (क) उपसर्गों की भाँति प्रत्यय भी शब्दांश होते हैं, शब्द नहीं।

(ख) उपसर्ग शब्द के आरंभ में लगते हैं और प्रत्यय अंत में।

(ग) उपसर्ग किसी-न-किसी अर्थ को प्रकट करता है जबकि प्रत्यय का अपना कोई निजी अर्थ नहीं होता।

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय दोनों के ही प्रयोग से शब्द का अर्थ बदल जाता है। उपसर्ग के उदाहरणस्वरूप–
आ + गमन– आगमन
अध + खिला– अधखिला
प्रत्यय के उदाहरणस्वरूप–
बल + वान– बलवान
घबरा + आहट– घबराहट

II. ना– गाना, खेलना; पन– बचपन, लड़कपन; त्व– स्त्रीत्व, मनुष्यत्व; अन– मिलन, जलन; नी– कतरनी, सुमरनी; आई– लिखाई, पढ़ाई; आहट– चिकनाहट, घबराहट; ई– मिठाई, पढ़ाई।

III. 1. सुंदरता, सुंदरतर; 2. पूजनीय, पुजारिन; 3. स्वतंत्रता, स्वातंत्र्य; 4. माननीय, मानता; 5. धर्मात्मा, धार्मिक; 6. आर्थिक, अर्थात।

IV. आऊ, ऊ, ईला, ड़ा, इक, आइन।

V. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख), 5. (क), 6. (घ)।

VI. 1. अनु, करण, ईय; 2. बे, चैन, ई; 3. ना, समझ, ई; 4. दुस्, साहस, ई; 5. बे, ईमान, ई; 6. हत्, उत्साह, इत; 7. अनु, उदार, ता; 8. सम्, मान, इत्; 9. ग़ैर, हाज़िर, ई; 10. परि, पूर्ण, ता।

8. शब्द-निर्माण : समास

I. 1. पीतांबर, बहुव्रीहि समास; 2. हिमालय, संबंध तत्पुरुष समास; 3. पथ-भ्रष्ट, अपादान तत्पुरुष समास; 4. भरपेट, अव्ययीभाव समास; 5. भलमानस, कर्मधारय समास; 6. चंद्रमुख, कर्मधारय समास; 7. कठपुतली,

संबंध तत्पुरुष समास; 8. पीतांबर, बहुव्रीहि समास; 9. गौशाला, संप्रदान तत्पुरुष समास; 10. जीवन-मरण, द्वंद्व समास।

II. 1. सत्याग्रह, 2. जन्मांघ, 3. लक्ष्य-भ्रष्ट, 4. राहखर्च, 5. जलधारा, 6. सिरदर्द, 7. भयभीत, 8. रोगमुक्त, 9. सुकोमल, 10. जलचक्की।

III. 1. (क), 2. (ख), 3. (घ), 4. (क), 5. (घ)।

IV. 1. (क), 2. (ख), 3. (ख), 4. (क), 5. (ग)।

9. शब्द-भेद : अर्थ के आधार पर

I. 1. (ग), 2. (क), 3. (क), 4. (घ), 5. (क)।

II. 1. विलाप, 2. संभावना, 3. कर्तव्य, 4. उत्साह, 5. उपहास, 6. सहानुभूति, 7. निर्णय, 8. खेद, 9. भ्रमण, 10. प्रणय।

III. 1. अहित, 2. शत्रुता, 3. डरपोक, 4. नाश, 5. प्रशंसा

IV. 1. मृदुभाषी, 2. सर्वप्रिय, 3. उद्यमी, 4. संकटग्रस्त, 5. अकल्पनीय।

V. 1. सरसराती, 2. रिमझिम, 3. चहचहा, 4. गुंजार, 5. कूकने।

VI. 1. गट्ठर, 2. गुच्छे, 3. टुकड़ी, गुच्छे, 4. रेवड़।

10. शब्द-भेद : संज्ञा

I. 1. व्यक्तिवाचक, 2. व्यक्तिवाचक, 3. जातिवाचक, 4. व्यक्तिवाचक, 5. जातिवाचक, 6. जातिवाचक, 7. जातिवाचक, 8. जातिवाचक, 9. व्यक्तिवाचक।

II. 1. उपयोगिता, 2. कुशलता, 3. कृत्रिमता, 4. एकता, 5. आलसीपन, 6. कृपणता।

III. 1. बच्चा, 2. व्यक्ति, 3. विद्वान, 4. नारी, 5. सज्जन, 6. बूढ़ा।

IV. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (क), 5. (ख)।

11. संज्ञा विकार : लिंग

I. 1. शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का ज्ञान हो, उसे 'लिंग' कहते हैं। उदाहरण– नाना, चाचा, बालक, पिता, भाई।

2. जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का पुरुष होने का बोध हो, उसे 'पुल्लिंग' कहते हैं।

3. जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का स्त्री जाति का होने का बोध हो, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं। उदाहरण–नौकरानी, बालिका, शेरनी, चुहिया, बहन।

4. 1. लोमड़ी, 2. बुलबुल, 3. मछली, 4. मक्खी, 5. गिलहरी।

5. 1. कीड़ा, 2. बाज़, 3. गरुड़, 4. चीता, 5. तोता।

II. 1. सिंह, हथिनी, 2. फूफाजी, 3. संपादिका, 4. बुढ़ियाओं, युवतियों, किशोरियों।

III. 1. (क), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ग)।

IV. 1. (क), 2. (ग), 3. (क), 4. (क), 5. (ख)।

V. 1. (क), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ग)।

12. संज्ञा विकार : वचन

I. 1. (ख), 2. (ख), 3. (ग), 4. (ख), 5. (ख)।

II. 1. अखबरों, 2. मेरे, 3. चिड़ियाँ, 4. पुस्तक।

III. 1. एकवचन, 2. बहुवचन, 3. बहुवचन, 4. बहुवचन, 5. बहुवचन।

13. संज्ञा विकार : कारक

I. 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया या अन्य शब्दों से ज्ञात हो, वह 'कारक' कहलाता है। कारक के आठ भेद हैं– (क) कर्ता कारक, (ख) कर्म कारक, (ग) करण कारक, (घ) संप्रदान कारक, (ङ) अपादान कारक, (च) संबंध कारक, (छ) अधिकरण कारक, (ज) संबोधन कारक।

2. जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है, वह 'कर्ता कारक' कहलाता है। जैसे– बलराम ने गदा उठाई। 'बलराम ने' कर्ता कारक है।

3. पेड़ से फल गिरा।

4. करण और अपादान कारक दोनों का परसर्ग से होता है, लेकिन दोनों में अंतर है। करण कारक में से परसर्ग का प्रयोग साधन / कारण के अर्थ में किया जाता है, जबकि अपादान कारक में 'से' परसर्ग का प्रयोग अलग होने, दूरी बताने, तुलना करने, डरने, लजाने, घृणा करने, ईर्ष्या करने आदि के अर्थ में किया जाता है। जैसे–

(क) सोहन बस से स्कूल गया। (करण कारक)

(ख) सोहन साइकिल से गिर गया। (अपदान कारक)

II. 1. संबंध, 2. अधिकरण, 3. करण, 4. अपादान, 5. करण, 6. संबंध, 7. अधिकरण, 8. अपादान, 9. अधिकरण, 10. करण, 11. अपादान, 12. संप्रदान।

III. 1. ने, 2. से, 3. के लिए, 4. को, 5. को, 6. के, 7. से, 8. पर, 9. अरे! 10. तुम्हारा।

IV. 1. (घ), 2. (क), 3. (ख), 4. (घ), 5. (क), 6. (क), 7. (ख), 8. (ग)।

14. सर्वनाम

I. 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को 'सर्वनाम' कहा जाता है। मैं, तुम, तू, वे, आप, कौन, कुछ, क्या, हमारा, तुम्हारा आदि सर्वनाम हैं।

2. संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। जैसे– 'मोहन आज स्कूल नहीं गया। मोहन को आज बुखार था।' इसमें मोहन शब्द का प्रयोग दो बार हुआ है। पहली बार यह संज्ञा है परंतु दूसरी बार मोहन शब्द का प्रयोग 'उसे' शब्द में होना चाहिए। 'उसे' सर्वनाम है।

3. किसी भी कहानी, उपन्यास लेख या नाटक आदि में संज्ञा की पुनरुक्ति हो तो भाषा प्रभावशाली नहीं लगती। संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग होने से भाषा अच्छी, शुद्ध और प्रभावशाली लगती है। जैसे–राधा का कल जन्मदिन था। राधा ने अपने सभी मित्रों को बुलाया। राधा के माता-पिता ने राधा को उपहार दिया। राधा ने केक भी काटा।

इसमें 'राधा' का प्रयोग बार-बार हुआ है जिससे कहानी में वह प्रभाव नहीं आता जो आना चाहिए था। इसकी जगह यदि सर्वनाम शब्दों को प्रयोग किया जाए तो वह प्रभावशाली लगेगा। जैसे–राधा का कल जन्मदिन था। उसने अपने सभी मित्रों को बुलाया। उसके माता-पिता ने उसे उपहार दिया। उसने केक भी काटा।

4. यह 'क्या' कर रहे हो?
मैदान में 'कुछ' गिरा हुआ है।

5. (क) निश्चयवाचक सर्वनाम से निश्चित होने का बोध होता है और अनिश्चयवाचक सर्वनाम से अनिश्चित होने का।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द पास की या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, जैसे–यह, ये, वह, वे आदि।

अनिश्चय सर्वनाम किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर ऐसे संकेत करें कि उनकी स्थिति अनिश्चित या अस्पष्ट रहे, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–कोई, किसी, कुछ आदि।

II. हम– उत्तम पुरुष, क्या– प्रश्नवाचक, उन्हें– अन्य पुरुषवाचक, कोई– अनिश्चयवाचक।

III. 1. (क), 2. (घ), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ग)।

IV. 1. (घ), 2. (क), 3. (घ), 4. (ग)।

V. 1. (ख), 2. (घ), 3. (ग), 4. (ग)।

15. विशेषण

I. 1. **गुणवाचक विशेषण–** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष का बोध हो, वे 'गुणवाचक विशेषण' कहलाते हैं। जैसे–अच्छा, बुरा, खट्टा, मीठा, सही, गलत आदि।

गुणों से तात्पर्य है किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, रंग, आकार, स्वभाव, अवस्था आदि का वर्णन करना।

भाववाचक संज्ञा– जिस संज्ञा-शब्द से किसी व्यक्ति या पदार्थ के गुण, भाव, दशा आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे– सुरेश का बहुत अच्छा स्वभाव है। उसकी अच्छाई की मिसाल पूरा शहर देता है। इसमें 'अच्छा' विशेषण है और 'अच्छाई' भाववाचक संज्ञा है।

2. विशेषण के द्वारा जिन शब्दों की विशेषता प्रकट की जाती है, उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं। विशेषण विशेष्य से पहले भी आता है और बाद में भी। जैसे–

(क) यह सुंदर फूल है।

(ख) फूल सुंदर है।

इन दोनों वाक्यों में सुंदर विशेषण है और फूल विशेष्य है।

3. 'प्रविशेषण' वे विशेषण शब्द हैं जो विशेषणों की विशेषता बताते हैं। जैसे–

(क) वह बहुत बेईमान है।

(ख) सचिन सबसे अच्छा खिलाड़ी है।

इन वाक्यों में 'बहुत' और 'सबसे' प्रविशेषण हैं। प्रविशेषण का प्रयोग विशेषण से ठीक पहले होता है।

4. निश्चयवाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण रूप-रचना के स्तर पर तो समान होते हैं, परंतु

वाक्य में प्रयोग के स्तर पर दोनों में अंतर हो जाता है।

जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर हो, उसे 'सर्वनाम' कहते हैं। जैसे–वह मुंबई गया। इस वाक्य में 'वह' सर्वनाम है लेकिन जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा से पूर्व अथवा बाद में विशेषण के रूप में किया गया हो, उसे 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। जैसे–वह रथ आ रहा है। इसमें 'वह' शब्द 'रथ' का विशेषण है। अत: यह सार्वनामिक विशेषण है।

5. कुछ, बहुत, थोड़ा, सब, काफ़ी आदि ऐसे विशेषण शब्द हैं जो परिमाणवाचक एवं संख्यावाचक दोनों में प्रयुक्त होते हैं। ऐसे में इनकी पहचान विशेष्य की प्रकृति के आधार पर की जाती है। जब ये शब्द किसी ऐसे संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बता रहे होते हैं जिसे गिना जा सके तो ये 'संख्यावाचक विशेषण' होते हैं। वहीं जब ये ऐसे संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बता रहे होते हैं जिसे गिना न जा सके, लेकिन मापा या तोला जा सके तो ये 'परिमाणवाचक विशेषण' होते हैं। जैसे–
(क) कुछ लोग मुंबई से आए हैं। (संख्यावाचक)
(ख) खीर में कुछ चीनी डाल दो। (परिमाणवाचक)

II. 1. पवित्र, 2. कठिन, 3. घना, 4. मुख्य, 5. मेरा, 6. तेज़, 7. सुर, 8. हास्य, 9. हमारा, 10. पौराणिक

III. 1. संकल्प, 2. जीवन, 3. शिक्षा, 4. लिखित, 5. कहानी, 6. सोच, 7. हाथी, 8. सामान, 9. ठंडा, 10. नमक, 11. दोस्त, 12. दिन, 13. फूल, 14. वस्तु, 15. जीवन, 16. मंडल, 17. बच्चा, 18. शरीर, 19. व्यक्ति, 20. खाना, 21. उच्च।

IV. 1. आदरणीय, 2. मानवीय, 3. पेटभर, 4. विनीत, 5. आत्मीय।

V. 1. शुद्ध, 2. व्यवहार, 3. तीव्र, 4. शूर, 5. कांति, 6. शोभा, 7. भय, 8. हर्ष, 9. दीप्ति, 10. संतोष, 11. शांति, 12. वीर।

VI. 1. भगोड़ा, 2. खेवैया, 3. कमाऊ, 4. दिखावटी, 5. रटू, 6. घटिया, 7. पियक्कड़, 8. अड़ियल, 9. गवैया, 10. डरपोक।

VII. 1. हम, 2. वे, 3. वह, 4. ये, 5. उन, 6. इन।

16. क्रिया

I.

	प्रथम	द्वितीय
1.	चलाना	चलवाना
2.	पीटाना	पिटवाना
3.	लिखाना	लिखवाना
4.	सुनाना	सुनवाना

II. 1. संयुक्त, 2. प्रेरणार्थक, 3. प्रेरणार्थक, 4. सामान्य, 5. पूर्वकालिक।

III. 2. राकेश सुन रहा है।
राकेश गाना सुन रहा है।

3. सोहन बोल रहा है।
सोहन कविता बोल रहा है।

4. शर्मा अंकल चल रहे हैं।
शर्मा अंकल पार्क में चल रहे हैं।

5. राम और सोहन देखने गए।
राम और सोहन फ़िल्म देखने गए।

IV. देखने, गया, कराया, कराकर।

17. काल

I. 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य होने का समय ज्ञात हो, वह 'काल' कहलाता है। जैसे–
(क) मोहन ने खाना खा लिया।
(ख) मोहन खाना खा रहा है।
(ग) मोहन खाना खाएगा।

2. काल के तीन भेद हैं– (क) भूतकाल, (ख) वर्तमान काल, (ग) भविष्यतकाल।
(क) भूतकाल–राकेश चला गया।
(ख) वर्तमान काल–राकेश जा रहा है।
(ग) भविष्यतकाल–राकेश जाएगा।

3. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य पूरा हो चुका है, उसे 'भूतकाल' कहते हैं। जैसे–
(क) भूतकाल–बच्चों ने क्रिकेट खोला।
(ख) वर्तमान काल–बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
(ग) भविष्यतकाल–बच्चे क्रिकेट खेलेंगे।

4. भूतकाल के छह भेद होते हैं–
(क) **सामान्य भूत–** क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध हो, किंतु ठीक समय का ज्ञान न हो, वहाँ 'सामान्य भूत' होता है। जैसे– बच्चा गया।

(ख) **आसन्न भूत–** आसन्न का अर्थ है–निकट। क्रिया के जिस रूप से अभी-अभी निकट भूतकाल में क्रिया का होना प्रकट हो, वहाँ 'आसन्न भूत' होता है। जैसे–बच्चा आया है।

(ग) **पूर्ण भूत–** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे 'पूर्ण भूत' कहते हैं। जैसे–बच्चा आया था।

(घ) **अपूर्ण भूत–** क्रिया के जिस रूप से कार्य का होना बीते समय में प्रकट हो, पर पूरा होना प्रकट न हो वहाँ अपूर्ण भूत होता है। जैसे– बच्चा आ रहा था।

(ङ) **संदिग्ध भूत–** क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध तो हो, किंतु कार्य के होने में संदेह हो, वहाँ 'संदिग्ध भूत' होता है। जैसे– बच्चा आया होगा।

(च) **हेतु-हेतुमद भूत–** हेतु का अर्थ है कारण। क्रिया के जिस रूप से बीते समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो अथवा एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया का न होना आश्रित हो, वहाँ 'हेतु-हेतुमद भूत' होता है। जैसे–यदि हमने बुलाया होता तो बच्चा ज़रूर आता।

5. क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। वर्तमान काल के तीन भेद हैं–

(क) **सामान्य वर्तमान–** क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य वर्तमान काल में सामान्य रूप से होता है, वहाँ 'सामान्य वर्तमान' होता है। जैसे– (*i*) बालक रोता है। (*ii*) अमर पत्र लिखता है।

(ख) **अपूर्ण वर्तमान–** क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी चल ही रहा है, समाप्त नहीं हुआ है, वहाँ 'अपूर्ण वर्तमान' होता है। जैसे– (*i*) बालक रो रहा है। (*ii*) अमर पत्र लिख रहा है।

(ग) **संदिग्ध वर्तमान–** जिस क्रिया के रूप से वर्तमान काल में कार्य के होने में संदेह का बोध हो, उसे 'संदिग्ध वर्तमान' कहते हैं। जैसे– (*i*) अब बालक रोता होगा। (*ii*) अमर इस समय पत्र लिखता होगा।

6. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा, वह 'भविष्यत काल' कहलाता है। भविष्यत काल के दो भेद हैं–

(क) **सामान्य भविष्यत–** क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो, उसे 'सामान्य भविष्यत' कहते हैं। जैसे– (*i*) नरेंद्र पुस्तक पढ़ेगा। (*ii*) राम गाना गाएगा।

(ख) **संभाव्य भविष्यत–** क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना का बोध हो, वहाँ 'संभाव्य भविष्यत' होता है। जैसे– (*i*) शायद इस वर्ष वर्षा कम हो। (*ii*) हो सकता है कल बुआ आएँ।

II. 1. रमा आती ही होगी।
2. संध्या तक वर्षा होगी।
3. हमें अपनी किताब व्यर्थ खुली नहीं रहने देनी चाहिए।
4. कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया है।
5. राम सामान खरीद रहा है।

III. 1. **संदिग्ध भूत–** कल प्रीति की शादी हो गई होगी।
2. **सामान्य भूत–** श्याम ने पत्र लिखा।
3. **सामान्य भविष्यत–** कल राधा गाएगी।
4. **पूर्ण भूत–** कल चाचाजी आए थे।
5. **संदिग्ध वर्तमान–** आशा इस समय पेपर दे रही होगी।
6. **संभाव्य भविष्यत–** हो सकता है आज बारिश आ जाए।
7. **अपूर्ण वर्तमान–** बारिश आ रही है।
8. **आसन्न भूतकाल–** लक्ष्य ने अभी खाना खाया है।
9. **अपूर्ण भूतकाल–** साहिल स्कूल जा रहा था।
10. **हेतुहेतुमद भूत–** यदि सार्थक परिश्रम करता तो अच्छे नंबरों से पास होता।

IV. 1. भूत, 2. भूत, 3. वर्तमान, 4. भविष्यत, 5. भूत।

V. 1. रमेश ने गीत गाया। रमेश गीत गाएगा। रमेश गीत गा रहा है।

2. कृष्ण ने राधा को बाँसुरी सुनाई थी। कृष्ण राधा को बाँसुरी सुनाएँगे। कृष्ण राधा को बाँसुरी सुना रहे हैं।

3. नीरजा अपने घर गई। नीरजा अपने घर जाएगी। नीरजा अपने घर जा रही है।

18. वाच्य

I. 1. बढ़ई द्वारा कुरसी बनाई जा रही है।
2. सिन्हा साहब आज्ञा पत्र जारी करते हैं।

3. विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी जा रही है।
4. मैं इस मामले पर सोच नहीं सकता।
5. उसके द्वारा झूठ बोला गया।
6. मोहन द्वारा फल खाए गए।
7. उससे लिखा नहीं जाता।
8. उससे दौड़ा नहीं जाएगा।
9. श्याम द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
10. नीरजा द्वारा खाना खाया नहीं जाता।

II. 1. कर्मवाच्य, 2. कर्तृवाच्य, 3. भाववाच्य।

III. 1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ख), 5. (ख), 6. (ग), 7. (क), 8. (ग)।

19. अव्यय : क्रिया-विशेषण

I. 1. जो शब्द क्रिया की विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें 'क्रिया-विशेषण' कहते हैं। जैसे–
(क) वह धीरे-धीरे बोलता है।
(ख) आप कब आए?
(ग) थोड़ा-सा दूध पी लो।

उपर्युक्त वाक्यों में धीरे-धीरे, कब, थोड़ा-सा क्रिया-विशेषण हैं।

2. क्रिया-विशेषण के चार भेद माने गए हैं–
(क) स्थानबोधक क्रिया-विशेषण
(ख) कालबोधक क्रिया-विशेषण
(ग) परिमाणबोधक क्रिया-विशेषण
(घ) रीतिबोधक क्रिया-विशेषण।

II.

	क्रिया-विशेषण	भेद
1.	कुछ	कालबोधक
2.	अचानक	विधि या प्रकारबोधक
3.	तेज़ी-से	रीतिबोधक
4.	ज़ोर-से	परिमाणबोधक
5.	तरह	तुलनावाचक
6.	तेज़	रीतिबोधक
7.	धीरे-धीरे	रीतिबोधक
8.	बहुत देर तक	परिमाणबोधक
9.	तरफ़	दिशाबोधक
10.	दूर-दूर	स्थानबोधक

III. **कालवाचक–** अतीत में, अब, तब, कहीं।
स्थानवाचक– इधर-उधर, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, जहाँ।
रीतिवाचक– चुपके-चुपके, ज़ोर से, तेज़ी से, धड़ाम-धड़ाम, कल-कल करती हुई।
परिमाणवाचक– धीरे-से, कम।

IV. ज़ोर-ज़ोर से, रह-रहकर तेज़, आमने-सामने, उधर, चमचम करती, उधर, ज़ोर-ज़ोर से, उधर।

V. 1. बहुत, 2. खूब, 3. शहर, 4. धीरे-धीरे, 5. गहरी नींद में, 6. अचानक, 7. ध्यानपूर्वक।

20. अव्यय

I. 1. ऊपर– स्थानवाचक, 2. के पास– स्थानवाचक, 3. भीतर– स्थानवाचक, 4. के सहारे– साधनवाचक, 5. के सामने– दिशावाचक।

II. 1. और– संयोजक समानाधिकरण समुच्चय
2. और– संयोजक समानाधिकरण समुच्चय
3. ताकि– उद्देश्यवाचक समुच्चयबोधक
4. क्योंकि– करणवाचक समुच्चयबोधक
5. अन्यथा और– विभाजक समुच्चयबोधक।

III. 1. ही, 2. भी, 3. तक, 4. केवल, 5. तो

IV. **विस्मयादिबोधक–** अहा!, अरे-अरे!, बिजली भी चमकने लगी।
संबंधबोधक– आज, इन्हें।
समुच्चयबोधक– कि।
क्रिया-विशेषण– अब, कैसा, तरह-तरह, ऐसा-ऐसा।
निपात– ही, भी।

V. 1. अरे नहीं!– विस्मयबोधक, 2. क्या!– विस्मयबोधक, 3. ओहो!– हर्षबोधक, 4. हाय!– शोकबोधक, 5. वाह!– हर्षबोधक, 6. धत्!– क्रोधसूचक, 7. हाँ-हाँ!– स्वीकारबोधक।

21. पद-परिचय

I. 1. सुमित्रानंदन पंत–
भेद–व्यक्तिवाचक संज्ञा; लिंग–पुल्लिंग; वचन–एकवचन; कारक–कर्ता कारक; संबंध–'कवि' क्रिया के साथ संबंध।

सर्वश्रेष्ठ–
भेद–गुणवाचक; लिंग–पुल्लिंग; वचन–एकवचन; अवस्था–मूलावस्था; विशेष्य–कवि।

2. आज, बाज़ार
भेद–कालवाचक, स्थानवाचक
संबंध–संबंधित क्रिया या निर्देश।

3. बिना–
भेद–विरोधवाचक, संबंध–संबंधित शब्दों का निर्देश।

4. ओह!–भेद–हर्षबोधक

किसने–भेद प्रश्नवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, कारक–कर्ता, संबंध–क्रिया या अन्य शब्द के साथ संबंध।

5. उफ़!–भेद–घृणाबोधक
योजित शब्दों या वाक्यांशों का निर्देश।

6. हम–भेद–निजवाचक
लिंग–पुल्लिंग, वचन–बहुवचन, पुरुष–उत्तम पुरुष, कारक–कर्ता, संबंध–क्रिया के साथ।

ताजमहल–भेद–व्यक्तिवाचक
लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, संबंध–क्रिया के साथ।

7. वह–भेद–अन्य पुरुषवाचक
लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, पुरुष–अन्य पुरुष, कारक–संबंध, संबंध क्रिया के साथ।

जाना–माना
भेद–समानतावाचक, संबंध–संबंधित शब्दों का निर्देश।

8. चाँदनी–दूधिया
भेद–गुणवाचक सर्वनाम, लिंग–स्त्रीलिंग, वचन–एकवचन, अवस्था–उत्तमावस्था, विशेष्य–रात, चाँदनी।

फैलकर–
भेद–परिमाणवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन।

9. तीन–
भेद–परिमाणवाचक, लिंग–पुल्लिंग, वचन–बहुवचन, विशेष्य–लोग।

मैंने–पुरुषवाचक।
लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, पुरुष–उत्तम पुरुष, कारक–करण, संबंध–क्रिया के साथ, उधर–भेद–दिशावाचक, संबंध–संबंधित शब्दों का निर्देश।

10. किसी, क्या
भेद–करणवाचक, संबंध–संबंधित शब्दों का निर्देश
मोहन
भेद–व्यक्तिवाचक संज्ञा, लिंग–पुल्लिंग, वचन–एकवचन, कारक–कर्ता कारक, संबंध–क्रिया के साथ।

II. 1. विशेषण, 2. सर्वनाम, 3. भाववाचक, 4. क्रिया-विशेषण, 5. सर्वनाम, 6. जातिवाचक, 7. सर्वनाम, 8. भविष्यत काल, 9. विशेषण, 10. क्रिया-विशेषण।

22. पदबंध तथा वाक्य

I. 1. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं–

(क) **साधारण या सरल वाक्य–** जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे 'साधारण या सरल वाक्य' कहते हैं। जैसे–कमला खाना बना रही है।

(ख) **संयुक्त वाक्य–** संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक समान स्तर के साधारण वाक्य होते हैं। जैसे–भरत आया किंतु भूपेंद्र चला गया।

(ग) **मिश्र वाक्य–** जब दो ऐसे वाक्य मिलें जिनमें एक मुख्य उपवाक्य तथा एक गौण अथवा आश्रित उपवाक्य हो, तब मिश्र वाक्य बनता है। जैसे–गांधी जी ने कहा कि सदा सत्य बोलो।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–
(क) विधानार्थक वाक्य, (ख) निषेधार्थक वाक्य, (ग) प्रश्नार्थक वाक्य, (घ) आज्ञार्थक वाक्य, (ङ) संदेहार्थक वाक्य, (च) इच्छार्थक वाक्य, (छ) संकेतार्थक वाक्य, (ज) विस्मयादिवाचक वाक्य।

विद्यार्थी इन भेदों के उदाहरण पुस्तक में से देख सकते हैं या स्वयं भी बना सकते हैं।

II. 1. सूरज निकला और किसान खेतों की ओर चल दिए।
2. वह बेकार बड़बड़ाता रहा किंतु मैंने उसे कुछ नहीं कहा।
3. मैंने उसे बहुत उकसाया पर वह नहीं बोला।
4. उसके पिताजी ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह न माना।
5. वे लोग हमारे पड़ोसी थे और उन्होंने हमें बहुत प्यार दिया।

III. 1. निषेधार्थक वाक्य, 2. प्रश्नार्थक वाक्य, 3. संदेहार्थक वाक्य, 4. विस्मयादिवाचक वाक्य, 5. आज्ञार्थक वाक्य।

IV. 1. मिश्र, 2. परिणामबोधक, 3. मिश्र, 4. मिश्र, 5. मिश्र

V. 1. विशेष्य उपवाक्य, 2. प्रधान उपवाक्य, 3. क्रिया-विशेषण उपवाक्य, 4. विशेषण उपवाक्य, 5. विशेषण उपवाक्य, 6. प्रधान उपवाक्य, 7. संज्ञा उपवाक्य, 8. क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

VI. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (क)।

23. वाक्य-परिवर्तन और संश्लेषण

I. 1. **संयुक्त–** मैं बीमार था इसलिए शादी में न आ सका।
मिश्र– बीमार होने के कारण मैं शादी में न आ सका।

2. **संयुक्त–** छात्रों ने परिश्रम किया और वे सफल हो गए।
मिश्र– क्योंकि छात्रों ने बहुत परिश्रम किया था इसीलिए वे सफल हो गए।

3. **संयुक्त–** मैंने उसे बताया पर उसने सुना नहीं।
मिश्र– जब मैंने उसे बताया तब उसने सुना नहीं।

4. **संयुक्त–** सभा समाप्त हुई और लोग घर चले गए।
मिश्र– सभा समाप्त होने पर लोग घर चले गए।

5. **संयुक्त–** आज बहुत वर्षा हुई इसलिए कार्यक्रम रद्द हो गया।
मिश्र– आज का कार्यक्रम रद्द हो गया क्योंकि बहुत वर्षा हो रही थी।

24. अशुद्ध वाक्यों का शोधन

I. 1. के पास, 2. में, 3. तुमने, 4. हमसे, 5. से, 6. तुम, 7. तेरे से, 8. मेरे को।

II. 1. दुश्मनों ने हथियार डाल दिए।
2. यहाँ शृंगार सामग्री मिलती है।
3. किताब छत पर पड़ी है।
4. वह बाज़ार से सब्ज़ी लाने गया।
5. यह कैसे संभव है।
6. गंगा पतित पावनी नदी है।
7. ये मेरे ही हस्ताक्षर हैं।
8. अभी तीन बजे हैं।
9. गाड़ियाँ सरक पड़ीं।
10. अब तुम जाओ।

25. विराम-चिह्न

प्रश्न I. और प्रश्न II. विद्यार्थी पुस्तक की सहायता से स्वयं करें।

26. अलंकार

I. 1. वह वस्तु अथवा सामग्री जिससे किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है, उसे 'अलंकार' कहते हैं। अलंकार के दो मुख्य प्रकार होते हैं– 1. शब्दालंकार, 2. अर्थालंकार।

2. 'पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून' यहाँ पानी शब्द का मोती के संदर्भ में अर्थ है चमक, मनुष्य के संदर्भ में इज़्ज़त तथा चून (आटा) के संदर्भ में जल।

3. तरणि ..... छाये में अनुप्रास अलंकार है क्योंकि इसमें 'त' वर्ण की आवृत्ति दो से अधिक बार हुई है।

4. काव्य में जब उपमेय और उपमान दोनों को एक रूप मान लिया जाता है, वहाँ 'रूपक अलंकार' होता है। जैसे–''पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।''

II. 1. **यमक अलंकार–** जहाँ पर एक शब्द की बार-बार आवृत्ति होती है और उतनी ही बार उसका अर्थ अलग-अलग होता है, वहाँ 'यमक अलंकार' होता है। जैसे–
कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जगर, वा पाये बौराय।।

यहाँ कनक का अर्थ धतूरा और 'सोना' (धातु) दोनों ही हैं।

श्लेष अलंकार– जहाँ एक ही शब्द के द्वारा एक से अधिक अर्थ का बोध हो, वहाँ 'श्लेष अलंकार' होता है।
रहिमन पानी राखिए, बिना पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून।।

यहाँ पानी के अर्थ है–चमक, सम्मान, जल।

2. **उपमा अलंकार–** जहाँ पर दो वस्तुओं की तुलना उनके रूप, रंग व गुण के अनुसार की जाए उसको 'उपमा अलंकार' कहते हैं। जैसे–कमल से सुंदर चरण।

रूपक अलंकार– जहाँ उपमेय व उपमान में भेद समाप्त हो जाता है अर्थात उपमेय और उपमान में कोई अंतर नहीं रहता है, वहाँ पर 'रूपक अलंकार' होता है। जैसे–

अंबर– पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी।

III. 1. (क), 2. (घ), 3. (घ), 4. (क), 5. (ग)।

IV. 1. (घ), 2. (क), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ग)।

27. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

I. 1. (घ), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख), 5. (ख), 6. (ग), 7. (क), 8. (घ), 9. (घ), 10. (क)।

II. 1. इधर-उधर की हाँककर, 2. ओंठ चबाना, 3. अंक

में भर लिया, 4. खून की घूँट पीकर रह गए, 5. उठा लिया।

III. 1. पानी फेर दिया, 2. से झूम उठा, 3. खानी पड़ी, 4. नश्वर है।

28. सार-लेखन या संक्षेपण

I. 1. **लोक गीतों की महत्ता–** लोक गीत अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित होते हैं। उनके शब्द, लय, आदि इसी पर निर्भर करते हैं। इसलिए कौन-सा गीत पहले बना यह नहीं बताया जा सकता। कहाँ गाया जाता है, बताया जा सकता है।

2. **स्वराज्य से सुराज्य–** जितना परिश्रम हमने स्वराज्य पाने के लिए किया उतना हम राज्य को समृद्ध बनाने में क्यों नहीं कर पाते? हम पैसा कमाना तो चाहते हैं परंतु बिना परिश्रम के। परिश्रम किए बिना कोई आगे नहीं बढ़ सकता और स्वराज्य को सुराज्य में बदला नहीं जा सकता।

3. **हमारी धरती, हमारा गर्व–** विज्ञान को अपनाते हुए भारतीय छात्रों ने पाश्चात्य संस्कृति को भी आत्मसात कर लिया है। भारतीय संस्कृति की मर्यादाएँ, परंपराएँ और सिद्धांतों को पूरी तरह पीछे छोड़ दिया है। भारतीय युवक-युवतियों को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए पाश्चात्य संस्कृति को भूलाकर भारतीय संस्कृति को अपनाए रखना होगा।

29. अपठित गद्यांश

I. 1. (ग), 2. (ग), 3. (क), 4. (क)

5. हमारा भारत

6. सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता एवं निर्भरता।

7. प्राचीनकाल की तरह आज भी विद्यालयों में देश-सेवा की भावना विद्यार्थियों में जागृत करनी चाहिए। देश को एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है और इसीलिए संपूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर बल दे रहा है।

8. हमारे देश को सैनिक शिक्षा की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है जिससे हमारी नवीन स्वतंत्रता की रक्षा हो सके।

II. 1. (घ), 2. (ग), 3. (ग), 4. (ख)

5. सद्ग्रंथ–हमारे मित्र

6. मानव अपने जीवन के लिए जो कुछ भी उत्तम की प्राप्ति करता है, उसमें सद्ग्रंथों का ही विशेष योगदान है।

7. निम्न श्रेणी की पुस्तकें त्याज्य हैं क्योंकि वे मानव को गलत राह पर ले जाती हैं।

8. सद्ग्रंथ मानव को सही राह दिखाते हैं। आदर्शपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। बुरी और निम्न श्रेणी की पुस्तकें अनिष्टकारी होती हैं। वे सदैव त्याज्य हैं।

III. 1. (ग), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क)

5. भारत की प्रकृति

6. भारत में भाषा, संस्कृति और धर्म की भिन्नताएँ और भौगोलिक विविधताएँ होते हुए भी यह देश एक है और इसमें रहने वाले हम सभी एक हैं।

7. प्रकृति ने भी इस महान देश को विविधताओं से मंडित किया हुआ है। छः ऋतुएँ हर दो महीने में अपना स्वरूप बदलती हैं। कहीं ऊँचे पहाड़ हैं कहीं मरुस्थल।

8. भाषा और धर्म के आधार पर लोगों का खान-पान, वेश-भूषा, ग्रंथ और त्योहार आदि में भिन्नताएँ हैं।

IV. 1. (ख), 2. (घ), 3. (ख), 4. (क)

5. प्रकृति का असंतुलन

6. जिस प्रकार खेतों में अनाज, फल, सब्ज़ी उगाने के लिए कीटनाशकों 'पेस्टीसाइड' आदि का इस्तेमाल इतनी अधिक संख्या में किया जा रहा है वह हमारा दैनिक विष ही है।

7. जनसंख्या अधिक होने की वजह से आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। हर कोई सही या गलत ढंग से पैसा कमाना चाहता है और इसी कारण एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहा है। नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, सब्ज़ी-फलों में कैमिकल्स छिड़के जा रहे हैं और फैक्टरियों से जो ज़हरीला धुआँ निकलता है उससे पशु-पक्षी, प्रकृति और सारा जन-जीवन प्रभावित हो रहा है।

8. जंगल को काटने का मतलब है, भूमि को आरक्षित करना, बाढ़ों को बढ़ावा देना और मौसम के बदलने में सहायक बनना।

30. अपठित गद्यांश

I. 1. (ग), 2. (ख), 3. (क), 4. (ख)

5. युद्ध करो
6. अपना अधिकार पाने के लिए मर जाते हैं या मार डालते हैं।
7. इन पंक्तियों में कवि लोगों से यह पूछना चाहता है कि अपने अधिकार की लड़ाई लड़ने में कैसा पाप है? जिस इंसान को अपना हक माँगकर या प्यार से नहीं मिलता उसे लड़ना ही पड़ता है। महाभारत में श्रीकृष्ण ने भी गीता-सार में कहा है कि अन्याय सहने वाला अन्याय करने वाले से बड़ा दोषी होता है।
8. कवि कहता है कि जो उचित है ऐसा न्याय यदि माँगने से न मिले तो लड़कर प्राप्त करना चाहिए। जो तेजस्वी होते हैं वे युद्ध करने से नहीं डरते। अपने अधिकार के लिए लड़ने में कोई पाप नहीं है। युद्ध में हमें निडर बनकर न्याय का (तलवार) खड्ग उठाना ही होगा।

II. 1. (ख), 2. (क), 3. (क), 4. (ख)
5. प्रकृति का यौवन
6. शृंगार रस
7. प्रकृति को पुरातनता सहन नहीं है। वह सदैव नूतनता अर्थात नए की तरफ़ चलती है। क्योंकि परिवर्तन में ही जीवन का आनंद है। प्रकृति सभी को यह समझाना चाहती है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। पुराना छोड़ो और नए को अपनाओ।
8. प्रकृति की सुंदरता बासी फूलों से नहीं बल्कि ताज़े फूलों से होती है। बासी फूल तो झड़कर धूल में मिल जाते हैं। नवीनता प्रकृति का नियम है।

III. 1. (क), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग)
5. माया
6. इच्छा, तृषा
7. जब तक वह मृत्यु के निकट नहीं पहुँच जाता।
8. जब तक मानव के मन में धन की लालसा रहती है वह अच्छा-बुरा नहीं पहचान पाता। हर समय धन उसे कठपुतली की तरह नचाता रहता है। जितना धन उसे प्राप्त होता जाता है उसकी इच्छा उतनी ही बढ़ती जाती है। जब मानव मृत्यु के निकट पहुँच जाता है तब उसे अहसास होता है कि उसने धन की लालसा में क्या गँवा दिया है। रिश्ते-नाते, प्यार-मोहब्बत सब बहुत पीछे छूट गए हैं। वह पूरा जीवन व्यर्थ के ढोंग करता रहा और असली जीवन जीना ही भूल गया।

IV. 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (क)
5. प्यारी धरती
6. क्योंकि यहाँ सभी तरह के जीव-जंतु, पशु-पक्षी, फूल-पौधे, हवा-पानी आदि है।
7. गज, हस्ती
8. जंगल का धरती से बहुत पुराना नाता है। पशु-पक्षियों को जंगल बहुत अच्छा लगता है क्योंकि यहाँ वे आज़ादी की साँस ले सकते हैं। जंगल की पवित्र हवा और पानी सबका दुख-दर्द दूर करती है। हरे-भरे जंगल होने से ही वर्षा होती है जिसके जल से सारी दुनिया की प्यास बुझती है। यह धरती रंग-बिरंगी है जो सारे सुख-दुख अपनी छाती में समेटे हुए है।

V. 1. (ख), 2. (क), 3. (घ), 4. (ख)
5. खिलौने वाला
6. सुंदर-सुंदर, हरा-हरा।
7. तरह-तरह के।
8. एक बच्चा अपनी माँ से कह रहा है कि खिलौने वाला तरह-तरह के खिलौने लाया है। जिसमें हरा तोता पिंजड़े में, गेंद, छोटी-सी मोटरगाड़ी, सीटी, रेल आदि हैं।

31, 32, 33, 34, 35 अध्याय

विद्यार्थी अन्य पुस्तकों की सहायता लेकर स्वयं करें।